श्री. विनोद दर्यापुरकर एवं जैन वर्ल्ड डॉट कॉम

लेखिका - सौ. मीना गरीबे (जैन) अकोला.
हिन्दी रुपान्तरकार - जमनालाल जैन, सारनाथ (वाराणसी)

सम्प्रति अटलांटा (अमरिका) में रहनेवाले श्री. विनोद श्यामलाल दर्यापूरकर अभीअभी भारत में आये थे । जैनों की काशी के रुप में प्रसिद्ध ऐतिहासिक, धार्मिक सांस्कृतिक विरासत से समृद्ध विदर्भ (महाराष्ट्र) की नगरी कारंजा का एक सुपुत्र प्रगति के अश्व रथ पर चला और उसके कर्तृत्व को विश्व का मैदान मिल गया । संसार में क्या करना है, किस क्षेत्र में कर्तृत्व चमकाना है - ऐसा तय करके कोई नहीं आता । किन्तु किसी एकाध के हाथसे प्रचंड और बड़ा काम नियति निर्माण कर देती है ।

कारंजा नगरी तथा अतिशय धार्मिक वृत्ति वाली माँ से उत्तराधिकार में प्राप्त समृद्ध धार्मिक संस्कारों के पाथ पर जीवन शुरू करनेवाले विनोदभाऊ* (भाई) ने अंगभूत होशियारी, अनथक मेहनत के आधारपर अपने कर्तृत्व का चित्र तैयार किया । भाई-बहनों में से सबसे छोटा, विनोदभाई ने अपने कर्तृत्व के बल पर अपनी जन्मभूमि तथा कुल का नाम विश्व के नक्शे पर उत्कीर्ण कर दिया है ।

जैनधर्म और जैनधर्म के समृद्ध वाङ्मय को विश्व के कोने-कोने में तथा जैन जैनोंतरों के कानों-मनों तक पहुँचाने का महान प्रभावपूर्ण कार्य करनेवाले विनोदभाई का कार्य अच्छी तरह समझने जैसा है ।

विनोद भाई की स्कूली शिक्षा कारंजा में हुई । इंजिनियरींग की B.E. तथा प्रबंधन की MBA की डिग्रीयाँ प्राप्त कर विनोद भाई ने अपने कारोबार का प्रारम्भ भारत में किया । किन्तु बाद में विदेश में नौकरी और अब अपने स्वतन्त्र निजी व्यवसाय के द्वारा प्रगति कर रहे हैं । विनोद भाई ने कम्प्युटर के क्षेत्र में प्रारम्भ में अनेक मल्टीनेशनल कंपनियों में कार्य किया । और अब विनोद दर्यापूरकर अपनी सॉफ्टवेअर कंपनी चला रहे हैं ।

विनोद भाई ने अपने व्यवसाय के निमित्तसे 50 से अधिक देशों का भ्रमण किया है । वे सात भाषाएँ जानते हैं । जैन दर्शन या तत्वज्ञान के साथ साथ हिन्दू, इस्लाम, क्रिश्चियन, सूफी, ताओ आदि मजहबों के धार्मिक तत्वज्ञान का गहरा और तुलनात्मक अध्ययन किया है । उन्होंने योग और ध्यान धारणा आदि का भी अभ्यास किया है । विविध जिज्ञासूजनों को योग तथा ध्यान-धारणा का शास्त्रीय ज्ञान कराते हैं, प्रशिक्षण देते हैं । साथ ही विविध धर्म, पंथ, राष्ट्रीयता आदि विषयों पर भी श्रोताओं के समक्ष भाषण दिये हैं ।

युवावर्ग के सामने धर्म और दर्शन पर बोलना, चर्चा करना कठीन काम है। परन्तु विनोद भाई को यह कला सध गयी है । पुराणत्र कथाओं की अपेक्षा आधुनिक युग के सरल, अनुभूत उदाहरणों द्वारा वे विषय को समझाने में कुशल हैं । इस कारण तरुण वर्ग आसानी से तत्वज्ञान का आकलन कर लेता है । विषय बोझिल और ऊबाऊं नहीं लगता । इन तरुण युवा-युवतियों में जैन-अजैन सभी रहते हैं।

माध्यम

रेडियो और टी.वी. के माध्यम से एक ही समय लाखों श्रोताओं तक पहुँचा जा सकता है । विनोद भाई भी इन दोनों माध्यमों द्वारा अपने विचार भाषणें द्वारा पहुँचाते रहते हैं। सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रमों में उनका सक्रिय सहयोग रहता ही है । लायन्स क्लब, Toast Master Club सामाजिक संस्था से वे 'Speaking & communication skill' यानी संवाद साधने की कला सिखाते हैं ।

उनके सामाजिक, धार्मिक तथा व्यावसायिक कार्यों की प्रगति के कारण अब तक उन्हें अनेक पुरस्कार तथा सम्मान प्राप्त हुए हैं । कम्प्युटर टेक्नॉलॉजी के क्षेत्र में असाधारण कर्तृत्व या सफलता के कारण उनका सम्मान किया जाता है । इसी तरह उत्कृष्ट वक्तृत्व से समाज सेवा तथा सामाजिक चेतना जगाने के कारण उन्हे पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं ।

निरन्तर विश्व-प्रवास ही जीवनशैली

विविध देशें का प्रवास करना, वहाँ की संस्कृतियों को समझना, भरपूर अध्ययन करना, संगीत सुनना आदि विनोद भाई के प्रिय विषय है । Web designing में भी उनकी विशेष रुची है । योग तथा ध्यान-धारणा का अध्यापन और अध्ययन करनेवाले विनोद भाई ने योग साधना के माध्यम से चेतना शक्ति की शुद्धता Purification of soul प्राप्त हो, यही उ-श्य है ।

विनोद भाई का अनुभव है कि दैनंदिन जीवन में क्रोधादिकषायों, अहंकार स्पर्धा, ईर्ष्या आदि के कारण आत्मा मलिन होती है । तरह-तरह की विषय वासनाओं का प्रभाव अन्तरंग पर पड़ता है और इस कारण जीवनशक्ति के द्वारा किये गये संकल्प सिद्ध नहीं होते । प्रातःकाल साढ़ेचार से छह बजे तक योगासनों तथा ध्यान के द्वारा अपनी चैतन्य आत्मशक्ती को शुद्ध, निर्मल करते हैं । उनकी दृष्टि में चेतना शक्ति की शुद्धि-प्रक्रिया का ही जीवन में सर्वोच्च स्थान है । बारह भावनाओं के चिन्तन से अहंकार का शमन होता है । किसी भी कार्य की सफलता में हम केवल निमित्त बनते हैं, इस विचार के कारण कार्य सिद्धि से उत्पन्न अहंकार दूर होता है । प्रातःकाल का बाह्य वातावरण भी शान्त और सुहावना रहता है । विकारों और कषायों से भरा प्राणी भी पापकर्मों को छोडकर निद्राधीन हो जाता है । इस से वातावरण की ऊर्जा भी शत प्रतिशत सकारात्मक ग्राह्य बन जाती है । कषायों के कारण अस्थिर चंचल चेतनाशक्ति रात्रि की शान्त, प्रगाढ़, निस्वप्न निद्रा के कारण स्थिर हो जाती है ।

समस्त सत्कार्यों तथा कर्म योग की प्रेरणा विनोदभाऊ को सबेरे के प्रसन्न, प्रफुल्ल वातावरण से ही मिलती है । उनकी संकल्प-शक्ति भी इसी समय बढ़ती है । सारे महत्वपूर्ण निर्णय इसी समय लेते हैं । उन्हें विश्वास है कि इसी कारण उनकी कार्य सिद्धि होती है।

आत्म-सामर्थ्य

विनोद भाई का विश्वास और अनुभव है कि कोई भी काम हाथ में लेते समय शत-प्रतिशत आत्मबल, शत-प्रतिशत संकल्पशक्ति होगी तो सामर्थ्य-युक्त समर्पित भावना से कार्य करने की तैयारी से सफलता अवश्य मिलेगी ।

उनका कहना है कि मंत्रों की अपनी एक शक्ति काम करती है । मंत्रों में स्वर, रंग और व्यंजनों के शुद्ध उच्चारण के साथ सात्त्विक भावना हो तो कार्य-सिद्ध होता है ।

आधुनिक जीवन पद्धति ने मनुष्य को एक देन दी है और वह है तनाव (Tention) । तनाव के कारण अनेक रोगो ओर बीमारियों ने शरीरों में घर बसा लिया है । मैने उनसे पूछा कि अमेरिका जैसे विकसित और प्रगति प्रधान देश में अपना व्यापार उद्योग चलाते समय क्या कभी आप टेंशन में नहीं आते ? उन्होंने मेरे इस बचकाने जैसे प्रश्न का बड़ा ही परिपक्व और सहज उत्तर दिया ।

टेंशन जरुरी नहीं

जीने के लिए मनुष्य को बहुत कम साधनों की, पैसों की जरुरत हैं । लेकिन मानसिक इच्छाएँ, रुचियाँ, सुख-सुविधा की चाह उनमें अनिश्चितता, अस्थिरता आदि के द्वंद्व उत्पन्न होते रहते हैं । व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का चक्र तो स्वाभाविक है । पर मैं तनाव में नहीं आता । व्यवसाय हो या जैन वर्ल्ड का निर्माण मैं अपने को निमित्त मात्र मानता हूँ । अपरिहार्य घटनाओं के बारे में कर्तृत्व की कर्तापन की भावना लुप्त होने पर व्यक्ति का अस्तित्व केवल निमित्त मात्र ही रह जाता है और इस कारण फिर उसे यश-अपयश या हानि लाभ की चिन्ता परेशान नहीं करती ।

'मनुष्य जीवन - वृक्ष व्यवहार में कितना भी बढ़-फैल जाय तो चलेगा, लेकिन उसे अपने मूल को, नींव को निश्चय में सम्हालना चाहिए !

प्रतिक्रिया - निवृत्ती

कर्तृत्व कर्तापन की भावना से अहंकार पैदा होता है । अहंकार मनुष्य को घटनाका सृजनात्मक आनन्द प्राप्त नहीं करने देता । विनोद भाई मानते है कि मनुष्य को घटना का यश - अपयश का दुःख नहीं होता तो उस घटना के कारण उत्पन्न प्रतिक्रिया का सुख-दुःख अधिक होता है । हमारा सारा जीवन प्रतिक्रिया वादी है । अहंकार में से, प्रतिस्पर्धा में से प्रतिक्रिया निपजती है । प्रतिक्रिया - निवृत्ती ही ध्यान का हेतु होना चाहिए ।

प्राचीन काल में, पौराणिक कथाओं के अनुसार समाज में विषम परिस्थितियाँ उपस्थित होने पर जैन मुनि कायोत्सर्ग (तप) करते थे । जैसे ही विनोदभाऊ ने यह वाक्य कहा, वैसे ही रक्षाबंधन विषयक कथा का स्मरण हुआ । सात सौ मुनियों के साथ मौन धारण करनेवाले आचार्य ने मौन के माध्यम से प्रतिक्रिया - निवृत्ति ही स्वीकारी थी । कायोत्सर्ग धारण करने से मुनियों की इधर-उधर बिखरनेवाली (अस्थिर) चेतनाशक्ति अपनी ही आत्मा पर एकत्र हो जाती है (Focus) । और इसके कारण जागृत आत्मबल आनेवाले संकट का मुकाबला कर सकता है । यही कारण है कि विनोद भाई प्रतिक्रिया निवृत्ति की सलाह देते हैं । प्रतिक्रिया निवृत्ति जैसे छोटे से मंत्रद्वारा जीवन में कितने ही संकट टाले जा सकते हैं। इससे आत्मबल में आनेवाली शिथिलता, मंदता भी दूर हो जाती है। जीवन का ध्येय (लक्ष) भी सध जाता है ।

इंटरनेट

वर्तमान युग का 'जानकारियों का महाजाल है इंटरनेट । इस अत्याधुनिक यंत्र का उपयोग करके जैन तत्वज्ञान विश्व के कोने-कोने में, गाँव-गाँव में पहुँचाने की कल्पना कैसे सूझी, यह बात भी विलक्षण रोमांचकारी है । ध्यान-साधना में आत्मा जानकारी या ज्ञान के स्तर पर से मानरहित तरल स्तर पर पहुँचता है और सुसुप्त जागृतावस्था आती है । इस ध्यानावस्था में रहते हुए ही जैन धर्म सम्बन्धी कोई न कोई बड़ा कार्य अपने हाथों होनेवाला है, इसका संकेत उन्हें अनेक बार अन्तरंग से मिलती रही । परन्तु यह पता नहीं चलता था कि उस बड़े काम का स्वरुप क्या होगा, कौन सा काम होगा । एक दिन उनकी कम्पनी के लिए Web - designing करनेवालीा एक मनुष्य मिलने आया । उस दिन उसे कम्पनी का काम नहीं दिया जा सका, परन्तु उसी दिन जैन वर्ल्ड का काम शुरू हो गया ।

आचार्य भद्रबाहू का स्मरण

विनोद भाई से उपरोक्त बात सुनने पर कतिपय ऐतिहासिक घटनाएँ याद आ गई । आचार्य भद्रबाहू स्वामी को अन्तरंग से स्पष्ट संकेत मिल गया था कि उत्तर भारत में 12 वर्ष का अकाल पड़ेगा और इसी कारण वे अपने समस्त शिष्यों के साथ दक्षिण की ओर विहार कर दिया था । गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी को भी जम्बूद्वीप बनाने का ऐसा ही संकेत श्रवणबेलगोला में मिला था । यह बात उनकी 'मेरी स्मृतियाँ' पुस्तक में है ।

शुद्ध ओर निर्मल, निर्वैर चित्तवालों को आज भी ऐसे संकेत मिल जाते है । पू. विनोबाजी उन दिनों छोटे विद्यार्थी थे, बडोदा में रहते थे । वे अपने माता-पिता के साथ अपने गाँव जा रहे थे । गाँव देखा नहीं था । स्टेशन पर बैठे थे । अचानक उनकी आँखों के सामने पूरा मकान आ गया । जाकर देखने पर उन्हें स्वयं आश्चर्य हुआ । एनीबेझेंट के विषय में भी कहा जाता है कि वे एक ही समय दो स्थानों पर थीं ! ऐसी सहज सिद्धियाँ या अनुभूतियाँ असम्भव नहीं है ।

स्वप्न तो प्रत्येक व्यक्ति देखता है । परन्तु रात्रि देखे हुए सपनों का कोई विशेष अर्थ नही होता । सपने तो वे साकार और

सफल होते हैं जो खुली आँखों से संजोये जाते हैं, संकल्प के साथ जुड़ते हैं । सतत कार्यरत व्यक्ति के परिश्रम, सूझबूझ से ही नियति ऐसे कार्य करा लेती है ।

जैन वर्ल्ड कॉम का जन्म

श्री विनोद भाई का Jain world.com का प्रारंभ भी ऐसे ही स्वप्न का परिणाम है । उनके मन में था कि जैन दर्शन और जैन धर्म विश्व के समक्ष प्रस्तुत करना है । बीज रुप में जिनवाणी के प्रचार-प्रसार का यह लक्ष्य अब विशाल वटवृक्ष बन गया है । जैन शास्त्र, कथा, साहित्य, भ. गोमटेश्वर के महामस्तकाभिषेक का चित्ररुप में संचलता हुआ दर्शन । विश्वभर में जैन धर्म से संबंधित चर्चाएँ, विद्वत्सम्मेलन, संगोष्ठी आदि का संकलन । स्तोत्र, जैन कथाओं पर आधारित कार्टून चित्र की मालिका, भक्ति-संगीत, दशलक्षण धर्म, दर्शन में प्रयुक्त कठीन, दुर्बोध-शब्दों के अर्थ बतानेवाला शब्दकोश, चित्रमय जैन बाराखड़ी, जैन पाक-क्रिया, जैन भोजन-आहार तथा आठ हजार से अधिक छायाचित्र (Photo), नाटक, प्रेक्षाध्यान, रेडिओ पर भाषण, संसार में स्थित सुन्दर भव्य मंदिर, तीर्थस्थान, 24 तीर्थंकरों के चरित्र आदि सब आज जैनवर्ल्ड डॉट कॉम वेब साइट पर आ गये हैं ।

जैन धर्म सिद्धान्त का प्राचीन तम आद्यग्रंथ षट्खंडागम भी इंटरनेट के माध्यम से सबके अध्ययनार्थ सामने आ रहा है । लाखों रुपये खर्च करके यह जैन आगम (श्रुत) रुपी अक्षय ज्ञानधन जैन वेब साईट के द्वारा समय के वज्र पटल पर अंकित हो रहा है ।

एक योजना पढ़ने में आयी थी कि ताम्र पट उत्कीर्ण षट्खंडागम मात्र से एक मंदिर बनेगा और उसमें यह ग्रंथ प्रतिष्ठित होगा । ताम्रपट पर उत्कीर्ण ग्रंथ तो प्रदान करनेवाले व्यक्तियों भावुक जनों तक ही पहुँचता. परंतु वेबसाईट पर दर्शित होनेवाली यह जिनवाणी एक ही समय हजारो दर्शकों तक पहुँच सकेगी । जैन वर्ल्ड डॉट कॉम पर अब तक पाँच कोट रुपये लग गये है ।

अस्सी हजार प्रेक्षक : छब्बीस भाषाएँ

जैन वर्ल्ड वेबसाईट 147 देशों में देखी जा रही है, फैली है और लगभग 80 हजार मनुष्य देखते हैं, और 26 भाषाओं के माध्यम से लोगों तक इसकी पहुँच है । और भी कई भाषाओं में जैन तत्त्वज्ञान पहुँचाने पर काम हो रहा है । यह सब विनोद भाई की श्रद्धा और दूर दृष्टी तथा विचारधारा का परिणाम है ।

मुस्लिम, ईसाई तथा बौद्ध धर्मों के अनुयायी अनेक देशों में फैले है। दक्षिण एशिया में हिन्दुधर्म का प्राबल्य है । परन्तु इन सबसे अलग विशिष्टता प्रधान प्राचीन काल से अस्तित्व में रहा जैन धर्म का प्रचार-प्रसार कतिपय धार्मिक मर्यादाओं के कारण विश्व में नहीं हो सका । केवल भारतीय उपखंड तक ही उसका अस्तित्व सीमित दायरे में रह गया । शैक्षणिक प्रगति तथा व्यापार वृद्धि, इन दो कारणों से पिछले पचास वर्षों में जैन धर्मानुयायी विदेशों में पैर जमाने लगे । ओर धीरे धीरे उनके साथ जैनधर्म का विचार भी पहुँचने लगे । पर यह सब अत्यंत सीमित, मर्यादित रुप में था । ऐसे समय जैन दर्शन शास्त्र, विचार और आचार प्रणाली, श्रेष्ठ जैन पुरुषों के चरित्र आदि विश्वभर में पहुँचे, इस उ-श्य से इंटरनेट के माध्यम से सबको उपलब्ध हो, इस भावना से जैन वर्ल्ड का स्तम्भ खड़ा किया ।

धर्म, पंथ, भाषा, आचरण, विचार, मंदिर, धर्मायतन, पूजा पद्धति, इतिहास, ऐतिहासिक विरासत, प्राचीन कला, वस्त्राभूषण, प्रतीक, रहन-सहन इन सबसे मिलकर संस्कृति बनती है । अंहिसात्मक विचार और आचार विश्व को प्रदान करनेवाली जैन संस्कृति ही एकमेव अद्वितीय है । जैन संस्कृति की शास्त्रशुद्ध जानकारी जगत में फैले, यह भी जैन वर्ल्ड डॉट कॉम का उ-श्य है ।

जैन धर्म अति प्राचीन धर्म है । अब जैन धर्म की प्राचीनता को आधुनिक इतिहास तज्ञ भी स्वीकारते है । मोहनजोदड़ो तथा हडप्पा में सिंधु सम्यता का प्रारंभ जैन धर्म के तीसरे तीर्थंकर संभवनाथ के काल में हुआ । संभवनाथ का विशिष्ट चिन्ह अश्व है और सिंधु नदी के आसपास का प्रदेश अश्वों के लिए प्रसिद्ध रहा है । सिंधू नदी के अवशेषों में नग्न पुरुषों की आकृतियों से अंकित मुद्राएँ मिली हैं । सिक्कों पर भी योगी देवता कायोत्सर्ग स्थिति में (खड़ी स्थिति में) दिखाई देती है । यह कायोत्सर्ग मुद्रा यह खासकर जैन ध्यान मुद्रा है । कायोत्सर्ग मुर्तियोंपर ऋषभ, भ.ऋषभनाथ का चिन्ह है । प्रो. प्राणनाथ विद्यालंकार सिंधु संस्कृति के धर्म को केवल जैन धर्म नहीं मानते, पर वहाँ प्राप्त एक मुद्रा पर 'जिन इस रह' अर्थात जिनेश्वर शब्द है, यह भी कहते हैं । अर्थात सिंधू संस्कृति के पूर्व भी भारत में जैन संस्कृति का अस्तित्व था । यज्ञ प्रधान वैदिक संस्कृति की अपेक्षा भिन्न और स्वतंत्र श्रमण संस्कृति आर्यों के भारत में आने के पहले विद्यमान थी, हिन्दी के प्रसिद्ध कवी श्री रामधारी सिंह दिनकर अपनी प्रसिद्ध कृति 'संस्कृति के चार अध्याय' में कहते हैं ।

सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ का चिन्ह स्वस्तिक भी अतिशय लोकप्रिय रहा है । ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर थे ऐसा उल्लेख वेदों में है । उनके पुत्र भरत के नाम पर हमारे देश का नाम भारत पड़ा । इसका भी स्पष्ट उल्लेख उपलब्ध है । संत एकनाथ के सार्थ भागवत में लिखा है ।

'ऐसा तो रिषभाचा पुत्र, जयासी नाव भरत
ज्याच्या नामाची किर्ती विचित्र, परम पवित्र जगा माजी
तो भरत राहिला भूमिकेसी, सकल कर्मारंभी करीती संकल्पासी
ज्यासिया नामासी स्मरताती।''

सार्थ एकनाथी भागवत 2/44-45
आचार्य विद्यानंदी महाराज के संग्रह मेंसे

श्री. विनोद भाई का महज् उ-श्य वही है कि जैनधर्म की विशेषताएँ और प्राचीनता विश्व के समक्ष रखी जाए और वे इसके लिए सतत प्रयत्नशील है ।

तीर्थंकर के समवसरण में तीर्थंकरकी देशना दिव्यध्वनि से प्रसारित होती है जो सभी जीव अपनी अपनी भाषा या बोली में समझ लेते हैं । इसीलिए विनोद भाई धर्मदेशना को 26 भाषाओं में प्रसारित कर रहे हैं ।

प्राचीनता, ऐतिहासिक तथ्यों, प्रमाणों तथा अहिंसात्मक जीवनशैली कैसे अणु प्राणित मानवाधिकार के साथ साथ प्राणीसमूह के जीने के अधिकार के विषय में जागरुकता निर्माण करना भी जैन वर्ल्ड का उ-ेश्य है ।

जैन वर्ल्ड के काम में 500 से अधिक मनुष्यों का सहयोग है ओर इनमें भी 90 % से अधिक लोक अजैन है । कतिपय अजैन कार्यकर्ता तो 20-20 वर्षों से जैन दर्शन के अभ्यासी है यानी आचरणसे जैन ही है ।

कार्य-पद्धति

जैन आगमों में कौन से ग्रंथ प्राचीन है और प्रामाणिक है । इनका संशोधन, परीक्षण अलग अलग ग्रुप के लोग करते हैं । इनमें से सर्वमान्य ग्रंथों का समावेश जैन वर्ल्ड में किया जाता है । अमेरिका, कनाडा, यूरोप, रूस, चीन, जापान आदि देशों के साथ साथ भारत में चेन्नई, सोलापूर, भुवनेश्वर, दिल्ली,राजकोट, मुंबई में भी जैन वर्ल्ड के आर्थिक, तांत्रिक, कानूनी व्यवस्था सम्भालने वाले दल कार्यरत हैं । जैन शास्त्रों के विभिन्न भाषाओं के अनुवाद के लिए Web.designing तैयार करने वाले भी हैं ।

जैन वर्ल्ड के e-mail पर अनेक प्रश्न पूछे जाते है। ऐसे प्रश्नों के सही और आगमनुकूल उत्तर देने की भी उत्तम व्यवस्था है, संशोधक और विद्वान उत्तर देते है । अनेक संस्थाओं तथा विश्वविद्यालयों को भी जेन धर्म की जानकारी भेजी जाती है ।

अमेरिका के स्कूलों और कालेजों में इंटरफेथ नामक एक प्रकल्प चलता है । अन्य धर्मोंका अध्ययन करते है । इसके लिए जैन धर्म विषयक पाठ्यक्रम भी चलाया जाता है । बी.बी.सी. के वेबसाईट पर जैन तत्त्व संबंधी एक विभाग जैन वर्ल्ड की ओर से तय किया गया है । अनेक पत्रपत्रिकाओं को भी जैन वर्ल्ड मदद करता है ।

जैन वर्ल्ड का कार्य किसी एक आम्नाय, सम्प्रदाय या पंथ तक सीमित नहीं है । यथार्थ रुप में केवल जैनतत्व और विचारधारा को घर-घर में पहुँचाना ही इसका ध्येय है । इस कारण क्रियाकांड, उपासना पद्धति का कोई महत्त्व नहीं है । जैनतत्त्वों के मूल्यों को रेखांकित करना ही मुख्य ध्येय है ।

शाकाहार

जैन तत्व का अमृत कुंभ शाकाहार की संकल्पना पर आधारित है । जैन वर्ल्ड की ओर से शाकाहार का व्यापक प्रचार भी स्वाभाविक है । श्री. विनोद दर्यापुरकर को विश्वास है कि सन 2020 तक यूरोप के 80 प्रतिशत लोग शाकाहारी बन जायेंगे । अमेरिका में भी शाकाहार के प्रति विशेष जागरुकता फैल रही है । वहाँ दूध को प्राणी जन्य पदार्थ मानने वाले लोग सोयाबिन मिल्क का उपयोग करते हैं । जैन वर्ल्ड के वेबसाईट पर भी अनेक प्रश्न पूछे जाते हैं यह प्रश्न भी पूछा गया कि पौंधों, पेड़ों आदि को काटे-छाटे या तोड़ें बिना गेहूँ-चावल आदि अनाज कहाँ मिलेंगे ?

जागरुकता का एक उदाहरण । एक चीनी मनुष्य ने e-mail द्वारा प्रश्न किया कि सम्पूर्ण रुप से शाकाहारी मनुष्य दुनिया में रह नहीं सकता । अगर कोई ऐसा व्यक्ति हो तो सूचित कीजिए । जैन वर्ल्ड और आचार्य विद्यानन्दजी महाराज के द्वारा उस चीनी मनुष्य को तीन दिन दिल्ली में और तीन दिन जयपूर में जैन परिवार में रखा गया । सम्पूर्ण शाकाहार के द्वारा भी जीया जा सकता है, यह बात उस चीनी को समझ में आ गयी ।

प्राणी सुरक्षा अथवा प्राणियों को अभयदान भी जैनों का एक पहलू या दृष्टिकोण है । अब तो सारे ही प्रगतिशील देशों में प्राणियों के जीवन ओर जीने के अधिकार के बारे में अनेक मानवतावादी संगठन काम कर रहे हैं ।

स्त्रियों को धर्माचरण समान अधिकर देना भी जैनत्व की एक महत्वपूर्ण देन है । आत्मोन्नति के लिए स्त्री-पुरुष समानता से पुरूषार्थ कर सकते हैं, यह जैन धर्म की विशिष्ट विचारधारा है । विश्व में कोई ईश्वर नहीं, कर्ताधर्ता निर्माता या संहारक नहीं है । केवल स्वतंत्र रूप से स्थित चेतना या आत्मा ही श्रेष्ठ है, यह अद्वितीय सिद्धांत जैन दर्शन का ही है । जैन धर्म एवं दर्शन की स्वतंत्र सत्ता और विचारधारा जो यथार्थ है, उसे विश्वभर में प्रसारित करने में जैन वर्ल्ड महत्वपूर्ण योग दे रहा है ।

अहिंसा और अपरिग्रह

अहिंसा और अपरिग्रह जैन जीवन शैली के महत्वपूर्ण स्तंभ है । अहिंसा का विधायक अर्थ है 'सत्त्वेषु मैत्र ।' अपरिग्रह का अर्थ है आवश्यकता से अधिक का संग्रह पाप है । अधिक संग्रह से शांति भंग होती है । मोह, माया, रागद्वेष आदि मानसिक प्रवृत्तियों का निराकरण करके जीवन चर्या सरल, सात्विक बनाने के लिए बारह भावनाओं (अनुप्रेक्षा) का चिन्तन किया जाता है । शरीर शुद्धि के लिए शाकाहार, मनोशुद्धि के लिए दोषमुक्त, चिन्तामुक्त जीवन चर्या और आत्मशुद्धि के लिए सत्साहित्य का अध्ययन, मनन और अपेक्षा रहित सेवाका विधान है । जैन वर्ल्ड डॉट कॉम की ओर से योग, योगासन, ध्यान, धारणा का भी प्रशिक्षण दिया जाता है । महर्षि पतंजलि के योगसूत्र पर भी शिक्षण की व्यवस्था है ।

हस्तलिखित प्राचीन साहित्य भी जैन मंदिरों और भंडारों में भरा पड़ा है । अब तक बहुत कम साहित्य प्रकाश में आया है । अब अनेक संस्थाओं द्वारा उनके संग्रह संशोधन प्रकाशन की ओर ध्यान गया है । कारंजा में भी काफी हस्तलिखित ग्रंथ है । जैन वर्ल्ड दुर्लभ पुस्तकें उपलब्ध कराने की भी योजना बना रहा है । क्योंकि पाश्चात्य शोधकर्ताओं के लिए प्राचीन, दुर्लभ पुस्तकों के प्रति विशेष आकर्षण रहता है ।

प्रत्यक्ष शंका समाधान

एलिजाबेथ लेहमन और क्लारा लेहमन इन दोनों ने e-mail से कई प्रश्न जैन वर्ल्ड से पूछे । ऐसे जिज्ञासुजन हजारों है जो बराबर अपनी शंकाएँ रखते रहते है । इन प्रश्नों के समाधान के लिए एक स्वतंत्र विभाग कार्यरत है । एलिजाबेथ और क्लारा अटलांटा में ही रहती है अतः श्री. विनोद भाई स्वयं उनसे मिले और उनका समाधान किया । ये दोनों बहनें अब जैन वर्ल्ड के अंग बन गयी है । सन 2003 में अमेरिका में हुए जैन इव्हेंट की पूरी रिपोर्ट संग्रह करने का महत्वपूर्ण कार्य श्री. विनोद भाई की पत्नी शोभा, कन्या शिवाली तथा लेहमन बहने इन चारों ने किया है । ऐसे अनेक उदाहरण हैं ।

लोक मिलते रहे, जुड़ते रहे, कारवाँ बढ़ता रहा ।

जैन वर्ल्ड के नाम में विनोद भाई का नाम कहीं नहीं है, क्योंकि वे मानते हैं कि मैं तो निमित्त मात्र हूँ ।

जैन वर्ल्ड की फैली हुई प्रवृत्तियाँ स्वयं का व्यवसाय, व्याख्यानों के दौरे, ध्यान-धारणा का प्रशिक्षण इन सारी प्रवृत्तियों को सम्हालने में विनोद भाई का दिन कितने घंटों का होता है, यह प्रश्न मेरे मन में उठा । इच्छा हो, लगन हो तो सारे काम सध जाते हैं, ऐसा विश्वास विनोद भाई में है । अभी तो और भी अनेक काम उन्हें करने है ! सम्पूर्ण जैन कथा वाङ्मय जैन वर्ल्ड में लाना है । इस काम में मेहनती, जिज्ञासू, अभ्यासीजन अवश्य प्रयत्न करें, यह आवाहन, निवेदन विनोदभाई ने किया है ।

इच्छाशक्ति के बल पर संसार के किसी भी कोने में धर्म-साधना की जा सकती है । विनोद भाई पूरी तरह शाकाहारी है । निर्व्यसनी है । छोटी सी जिन प्रतिमा भी उनके यहाँ है और वे नियमित देवदर्शन करते हैं । अटलांटा के जैन मंदिर में श्वेतांबर और दिगम्बर मिलकर 18 दिनों का पर्युषण पर्व मनाया जाता है । लगभग 405 जैन परिवार अटलांटा में रहते है । पूजा-पाठ, विधी-विधान में सबका पूरा सहयोग रहता है ।

श्रद्धावान, विवेकी और क्रियाशील व्यक्ति को श्रावक कहा जाता है । ऐसे ही व्यक्ति हैं विनोद दर्यापूरकर, जिन्हें श्रेष्ठ श्रावकही कह सकते हैं ।

भारत के इस छोटे से प्रवास काल में सभी रिश्तेदारों से मिलते हुए और जगह जगह जैन वर्ल्ड की जानकारी देते हुए और उसके लिए कार्य व प्रयत्न करने का निवेदन करते हुए प्रवास पूरा किया । 21 जनवरी को प्रस्थान कर गये । Be a part of the dynamic movement यह उनका आवाहन है । Tell the world about jain world, यह उनके आवाहन का प्रतिसाद के रुप में यह आलेख । अब विश्व के किसी भी कोने में किसी को भी, कभी भी, कैसा भी जैन सन्दर्भ जरुरी लगे तो Just Visit www.jainworld.com.

सौ. मीना गरीबे (जैन)
2, शिवनेरी सहनिवास,
विजय सोसायटी,
गोरक्षण रोड, अकोला (महा.)

*(मराठी में भाई को 'भाऊ' कहा जाता है ।)